ISSN: 2583-0511 (Online)

डेरी के उत्पादन आकलन हेतु मापदंड

डॉ.ममता, डॉ. अजय, डॉ.रजनीश सिरोही एवं
डा. दीप नारायण सिंह

पशु चिकित्सा एवं पशु विज्ञान महाविद्यालय
दुवासु, मथुरा

लाभ या हानि एक आधारभूत आर्थिक संकेतक है जोकि कुल व्यय एवं कुल आय के बीच का अंतर होता। पशुओं सम्बंधित अर्थव्यवस्था का सीधा सम्बन्ध पशु की जैविक क्षमता तथा प्रबंधक की प्रबंधकीय दक्षता के साथ जुड़ा हुआ है सरल शब्दों में कहा जाये तो वे मापदण्ड जिनका सीधा सम्बन्ध आय से जुड़ा हुआ है, उत्पादन मापदंड कहलाते हैं। उत्पादन मानक पशु की जैविक क्षमता के अनुश्रवण को प्रभावी बनाकर प्रबंधक की दक्षता को अधिक प्रभावी बनाने में महत्वपूर्ण योगदान प्रदान करते हैं साथ ही इन मानकों के आधार पर प्राप्त आंकडें पशुओं के प्रजनन हेतु चयन के लिए आधार प्रदान करते हैं। आम तौर पर आर्थिक लक्षण वे होते हैं जो या तो प्राप्त आय या उत्पादन की लगत को प्रभावित करते है। प्रजनन के लिए किसी भी पशु का चयन और निर्णय किसी भी प्रजनन कार्यक्रम को शुरू करने के लिए पहला और सबसे महत्वपूर्ण कदम है। इसके लिए बाहरी संरचना और व्यवहार सम्बन्धी लक्षणों को ध्यान में रखा जाता है। मात्रात्मक लक्षणों पर पर्यावरण का बहुत प्रभाव पड़ता है। प्रमुख मापदंड निम्न प्रकार से हैं।

भौतिक संरचना सम्बन्धी लक्षण -शरीर की दशा अयन संरचना ।
स्वास्थ्य सम्बन्धी लक्षण - रोग प्रतिरोधक क्षमता ।
प्रबंधन सम्बन्धी लक्षण- दीर्घ उत्पादक आयु दूध उतरना।
प्रजनन सम्बन्धी लक्षण -पहली बार ब्याने की उम्र ब्याने का अंतराल शुष्क अवधि।

दुग्ध उत्पादन संबंधी मापदंड –
लेक्टऐशन अवधि - यह प्रजनन के बाद तथा शुष्क काल के बीच दुग्ध उत्पादन की अवधी है। इष्टतम लेक्टऐशन अवधि 305 दिन की होनी चाहिए ।
लेक्टऐशन उत्पादन-- एक लेक्टऐशन अवधी में प्राप्त कुल दुग्ध उत्पादन को लेक्टऐशन उत्पादन कहा जाता है। स्वदेशी नस्लों में लेक्टऐशन उत्पादन विदेशी नस्लों की तुलना में बहुत कम है। यह मानक बयत की संख्या दूध दुहने की आवृति आदि कारको पर निर्भर करता है।
शिखर उत्पादन-- दुग्ध उत्पादन काल का वह बिंदु जिसपर उत्पादन अपने उच्चतम स्तर पर पहुँचता है। सामान्यतः पशु ब्याने के लगभग चार से दस सप्ताह बाद अपने शिखर उत्पादन स्तर पर पहुँचता है।

ISSN: 2583-0511 (Online)

दुग्ध उत्पादन की दृढ़ता - अधिक लेक्टशन उत्पादन प्राप्त करने के लिए शिखर उत्पादन का लंबे समय तक बने रहना आवश्यक है। शिखर उत्पादन की इस अवधी को बनाये रखना दुग्ध उत्पादन की दृढ़ता कहलाता है। शिखर उत्पादन में कमी जितनी धीमी गति से होगी उत्पादन की दृढ़ता उतनी ही सुदृढ़ होगी।

वासा तथा वसा रहित ठोस की मात्रा - साधारणतयः दूध में 85% जल होता है और शेष भाग में ठोस तत्त्व व वसा होते हैं। इस ठोस तत्त्व के मुख्य अवयव प्रोटीन तथा खनिज लवण होते हैं। इन अवयवों की मात्रा विभिन्न पशुओं में तथा एक ही पशु में विभिन्न समयों पर भिन्न भिन्न होती है।

झुण्ड औसत - जब कुल दुग्ध उत्पादन के औसत को पूरे झुण्ड के लिए गणन किया जाता है तो यह झुण्ड औसत कहलाता है गायों से जुड़े व्यवसाय के लिए 8 से 10 लीटर का झुण्ड औसत उपयुक्त मन जाता है।

वेट औसत - जब कुल दुग्ध उत्पादन के औसत का केवल दूध देने वाले पशुओं के लिए गणन किया जाता है तो यह वेट औसत कहलाता है। वेट औसत सदैव झुण्ड औसत से अधिक होता है।

उत्पादक जीवन काल - यह पशुओं के जीवनकाल में दूध देने की कुल अवधी है। यह पशुओं के विभिन्न दुग्ध उत्पादन कालो को औसत करके उसकी उत्पादक क्षमता की सही स्तिथि को दर्शाता है।

डेरी व्यवसाय में दुग्ध उत्पादन संबंधी इन मानकों के सही अनुश्रवण से आर्थिक लाभ को निसंदेह बढ़ाया जा सकता है।